www.researchvidyapith.com ISSN (Online): 3048-7331

Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal

(International Open Access, Peer-reviewed & Refereed Journal)

(Multidisciplinary, Monthly, Multilanguage)

* Vol-2* *Issue-6* *June 2025*

भारतीय अर्थव्यवस्था पर स्टार्टअप का प्रभाव

सद्दाम हुसैन

शोधार्थी, अर्थशास्त्र विभाग, जयप्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा, बिहार

सार

भारत एक मिश्रित अर्थव्यवस्था वाला विकासशील देश है, इसलिए राष्ट्र के विकास के लिए भारतीय अर्थव्यवस्था का विकास करना बहुत महत्वपूर्ण है। आधे भारतीय श्रमिक अपनी आजीविका के लिए कृषि पर निर्भर हैं। भारत को चिकित्सा, शिक्षा, प्रौद्योगिकी जैसे हर क्षेत्र में आत्मनिर्भर होने की आवश्यकता है, क्योंकि ये स्टार्टअप बहुत आवश्यक हैं। सरकार ने कई नीतियाँ शुरू की हैं, जिनका उद्देश्य स्टार्टअप के लिए कारोबारी माहौल को आसान बनाना है। अध्ययनों से पता चलता है कि भारत को हर साल 100 मिलियन से अधिक नौकरियों की आवश्यकता है और जो नौकरियाँ पैदा होती हैं, वे ज्यादातर स्टार्टअप से होती हैं। स्टार्ट–अप उद्यमिता महत्वपूर्ण है क्योंकि यह कारोबारी माहौल में नए नवाचार, नई नौकरियाँ और प्रतिस्पर्धी गतिशीलता भी लाती है। आज की दुनिया में आर्थिक समृद्धि में स्टार्ट–अप की भूमिका बढ़ रही है। स्टार्ट–अप का एक मुख्य लाभ यह है कि यह नई नौकरियाँ पैदा करता है। वैश्विक डेटा से पता चलता है कि हमारे देश में बड़ी कंपनियों या उद्यमों की तुलना में स्टार्ट–अप अधिक नौकरियाँ पैदा कर रहे हैं।

मुख्य–शब्द– स्टार्टअप इंडिया; इकोसिस्टम; प्रभाव; नीतियाँ।

परिचय

सरकारी अधिसूचना के अनुसार, यदि कोई इकाई प्रौद्योगिकी की बौद्धिक संपदा द्वारा संचालित नए उत्पादों, सेवाओं या प्रक्रियाओं के विकास, व्यावसायीकरण और नवाचार की दिशा में काम कर रही है, तो उसे स्टार्टअप के रूप में पहचाना जाएगा। भारत भर में व्यावसायिक उद्यमों की बाढ़ आ गई है। सरकार ने "स्टार्ट–अप इंडिया" नामक एक पहल भी शुरू की है, जिसका उद्देश्य देश में नवाचार के साथ जमीनी स्तर के स्टार्ट–अप को बढ़ावा देने के लिए एक मजबूत पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण करना है, जो बड़े पैमाने पर रोजगार के अवसर पैदा करेगा और सतत आर्थिक विकास को बढ़ावा देगा। इस पहल के माध्यम से सरकार का उद्देश्य स्टार्ट–अप को उनके डिजाइन और नवाचार के माध्यम से बढ़ने के लिए सशक्त बनाना है। यह पत्र वर्तमान स्टार्ट–अप वातावरण को भारतीय परिवेश में अभिनव बनाने के लिए मूलभूत बिंदुओं को प्रस्तुत करता है और विभिन्न देशों और राज्यों की रणनीतियों की तुलना करके आज भारत के सामने आने वाली संबंधित कठिनाइयों में से कुछ को दर्शाता है ताकि यह पता लगाया जा सके कि इनमें से कौन सी सबसे सकारात्मक है और स्टार्ट–अप पारिस्थितिकी तंत्र विकसित करने के लिए नवाचार के उन्नयन की दिशा में भारत की विधायिका द्वारा किए गए प्रयासों को दर्शाता है।[1]

उद्देश्य

- स्टार्ट–अप इंडिया के लिए पहल का विश्लेषण करना।
- स्टार्ट–अप इकोसिस्टम का अध्ययन करना।
- भारतीय अर्थव्यवस्था पर स्टार्ट–अप के प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष प्रभाव का अध्ययन करना।
- नवाचार को बढ़ावा देने और उभरते उद्यमियों को अवसर प्रदान करने के लिए देश में एक मजबूत स्टार्ट–अप इकोसिस्टम बनाने के लिए लोगों को प्रेरित करना।

कार्यप्रणाली

पूरी अर्थव्यवस्था में स्टार्ट–अप के योगदान को मापकर अर्थव्यवस्था पर स्टार्ट–अप के प्रभाव को मापना।

सरकार द्वारा शुरू की गई विभिन्न योजनाओं, विभिन्न स्टार्ट–अप नीतियों और प्रोत्साहनों की प्रभावशीलता को मापना।

साहित्य की समीक्षा

निशिथ देसाई, (2016)[2] "एक सफल संगठन बनने के लिए स्टार्ट–अप को कई मुद्दों का सामना करना पड़ता है, जिन्हें स्मार्ट तरीके से और बहुत सोच–समझकर और व्यवस्थित तरीके से निपटाया जाना चाहिए।"

- बद्रा, (2017)[3] – शुरुआती वर्षों में बहुत उत्साह और उत्कृष्टता की ओर झुकाव के कारण, नए व्यवसाय आम तौर पर प्रतिभा और रचनात्मकता का प्रदर्शन करते हैं, जिसके लिए बहुत अधिक और नियमित मात्रा में वित्त की आवश्यकता होती है।
- एस्पार्क विरिडियन, (2017)[4] – नैसकॉम के अनुसार, वर्ष 2020 के अंत तक, लगभग 11,500 स्टार्ट–अप लगभग 2.5 लाख लोगों को रोजगार देंगे, जबकि वर्तमान में 75,000 लोग कार्यरत हैं। एसोचैम की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि आने वाले वर्षों में ये स्टार्टअप अधिक अमीर लोगों को जन्म देंगे और टाइकून मुख्य रूप से नवाचार से प्रेरित होंगे।
- मिश्रा, (2018)[5] मौजूदा अनुभवजन्य उद्यमिता साहित्य मुख्य रूप से उद्यमिता और आर्थिक विस्तार के बीच सकारात्मक संबंध को प्रदर्शित करता है।
- अरिहंत जैन, (2017)[6] "स्टार्ट–अप भारतीय अर्थव्यवस्था को बहाल कर रहे हैं"।

  रानी, (2017)7 भारत एक ऐसा देश है जहाँ लोग अपने काम, कौशल और नवाचार के लिए प्रसिद्ध हैं।
- अरिहंत जैन, (2018)[8] "भारतीय अर्थव्यवस्था पर स्टार्ट–अप के प्रभाव पर एक अध्ययन"।
- मीनाक्षी बिंदल, (2018)[9] "भारतीय अर्थव्यवस्था पर स्टार्ट–अप की भूमिका"।
- भुवन गुप्ता, (2018)[10] "भारतीय अर्थव्यवस्था पर स्टार्ट–अप की भूमिका"– इंजीनियरिंग और प्रबंधन अनुसंधान की आंतरिक पत्रिका।
- हंस वेस्टलंड, (2011)[11] "आर्थिक उद्यमिता, स्टार्ट–अप और स्थानीय विकास पर उनके प्रभाव।

सागर लोटन चौधरी, (2021)[12] "भारत में स्टार्ट–अप इसमें एक प्रमुख भूमिका निभाते हैं। वैश्विक स्टार्ट–अप पारिस्थितिकी तंत्र में भारत तीसरे स्थान पर है। भारतीय अर्थव्यवस्था पर स्टार्टअप का महत्व जब शीर्ष वैश्विक निवेशक आज भारत को देखते हैं, तो उन्हें संभावनाओं से भरा देश दिखाई देता है। बड़ी आबादी, बड़े अप्रयुक्त बाजार, विविध संस्कृतियाँ, यह सब उद्यमी और उद्यम अनुकूल सरकारी पहलों द्वारा समर्थित है, जिसका मतलब है कि भारतीय अर्थव्यवस्था बड़े निवेशकों को चुंबक की तरह आकर्षित कर रही है। भारत में स्टार्टअप के महत्व का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि स्टार्ट–अप सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण रूप से अभिनव और प्रभावी समाधान बनाते हैं, जिससे जीवन और काम आसान हो जाता है। वे तेज़ी से बढ़ते हैं जिसका अर्थ है कि सभी कार्य स्तरों पर अधिक नौकरियाँ सृजित होती हैं। भारतीय कंपनियों द्वारा 2030 तक पाँच लाख नई नौकरियाँ, यात्रा और आतिथ्य उद्योग द्वारा 2028 तक 52.3 मिलियन नौकरियाँ और खाद्य तकनीक उद्योग द्वारा 2025 तक 9 मिलियन नौकरियाँ सृजित करने की उम्मीद है। अपनी अत्याधुनिक तकनीक के साथ, स्टार्ट–अप आउटसोर्सिंग के केंद्र बन जाते हैं, जिसका अर्थ है मूल्यवान विदेशी मुद्रा का प्रवाह। फिनटेक स्टार्टअप कम लागत पर डिजिटल समाधान पेश करके देश में माइक्रो–क्रेडिट गैप को तेजी से पाट रहे हैं, जो कि कम–से–कम ग्राहक वर्ग को दिया जाता है। टियर प्प और टियर प्प्प शहरों में अधिक अवसर देखने को मिल रहे हैं और वे बेहतर जीवन स्तर की ओर बढ़ रहे हैं। स्टार्टअप भारत की जीडीपी में भी महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। हेल्थ टेक, फिनटेक, एडटेक और क्लीनटेक जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों ने नए बिजनेस मॉडल बनाए हैं यह जनसंख्या जो अर्थव्यवस्था का एक बड़ा हिस्सा है, लाभकारी रूप से कार्यरत है और उसके पास खर्च करने लायक आय है। भारत को आईटी, एआई, वीआर, डीप टेक और बहुत कुछ में सर्वश्रेष्ठ दिमागों का घर माना जाता है। प्रतिभाओं के लिए पथ–प्रदर्शक तकनीकों और नवाचारों के साथ आने का सबसे अच्छा तरीका एक स्टार्ट–अप है।[13]

स्टार्टअप इंडिया

स्टार्टअप इंडिया स्टार्ट–अप बनाने और नवाचार को बढ़ावा देने के लिए भारत सरकार की एक प्रमुख पहल है। इस पहल के माध्यम से, सरकार पूरे भारत में उद्यमिता, आर्थिक विकास और रोजगार को बढ़ावा देने के लिए स्टार्ट–अप उपक्रमों को सशक्त बनाने की योजना बना रही है। सरकार की कार्य योजना पूरे भारत में स्टार्ट–अप के विकास को गति देने में मदद करेगी, सभी महत्वपूर्ण क्षेत्रों में– टियर 1, 2 और 3 शहरों में, अर्ध–शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों सहित और इसमें उद्यमिता को बढ़ावा देना शामिल है।

स्टार्टअप इंडिया क्यों?

स्टार्टअप इंडिया भारत में समृद्धि पैदा करने के बारे में है। कई उद्यमी लोग जो अपना खुद का व्यवसाय शुरू करने का सपना देखते हैं, उनके पास ऐसा करने के लिए संसाधनों की कमी होती है। परिणामस्वरूप, उनके विचार, प्रतिभा और क्षमताएं अप्रयुक्त रह जाती हैं और देश धन सृजन, आर्थिक विकास और रोजगार से वंचित रह जाता है। स्टार्टअप इंडिया यह सुनिश्चित करके उद्यमशीलता और आर्थिक विकास को बढ़ावा देने में मदद करेगा कि जिन लोगों में नवाचार करने और अपना खुद का व्यवसाय शुरू करने की क्षमता है, उन्हें कई स्तरों पर सक्रिय समर्थन और प्रोत्साहन के साथ प्रोत्साहित किया जाए।

स्टार्टअप इंडिया एक्शन प्लान का शुभारंभ

भारत भर में नवाचार को बढ़ावा देने और स्टार्ट–अप को सशक्त बनाने के लिए एक मजबूत पारिस्थितिकी तंत्र बनाने के लिए भारत सरकार द्वारा प्रस्तावित कई पहलों और योजनाओं को उजागर करने के लिए 16 जनवरी, 2016 को प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा स्टार्टअप इंडिया एक्शन प्लान का अनावरण किया गया था।

स्टार्टअप इंडिया के लिए समर्थन

स्टार्टअप इंडिया अभियान को भारत की विकास कहानी में स्टार्ट–अप को सबसे आगे लाने के अपने प्रयास के लिए दुनिया भर से समर्थन मिला है। यह उद्यमियों को उनकी रचनात्मकता और विकास का समर्थन करने के लिए एक मजबूत पारिस्थितिकी तंत्र के साथ उन्हें सशक्त बनाते हुए उनके मुख्य व्यवसाय पर ध्यान केंद्रित करने की अनुमति देता है।

स्टार्टअप इकोसिस्टम

स्टार्टअप इकोसिस्टम लोगों, उनके विभिन्न चरणों में स्टार्टअप और एक स्थान पर विभिन्न प्रकार के संगठनों द्वारा नई स्टार्ट–अप कंपनियों को बनाने के लिए एक प्रणाली के रूप में बातचीत करके बनाया जाता है। इसके अलावा, कौशल, समय और धन जैसे संसाधन भी एक स्टार्ट–अप इकोसिस्टम के आवश्यक घटक हैं। इकोसिस्टम के माध्यम से प्रवाहित होने वाले संसाधन मुख्य रूप से उन लोगों और संगठनों से प्राप्त होते हैं जो उन स्टार्ट–अप इकोसिस्टम का सक्रिय हिस्सा हैं।

भारतीय अर्थव्यवस्था पर स्टार्टअप का सीधा प्रभाव

अधिक नौकरी रिक्तियाँः भारत जिस गंभीर समस्या का सामना कर रहा है, वह है बेरोज़गारी। जो नौकरियाँ पैदा होती हैं, वे ज़्यादातर स्टार्ट–अप से आती हैं, न कि बड़े उद्यमों से। चूँकि स्टार्ट–अप आर्थिक मंदी और बोझ से मुक्त होते हैं, इसलिए वे अधिक कर्मचारियों का प्रबंधन कर सकते हैं। नई तकनीक जो उत्पादन लागत में कटौती करती है तकनीकी प्रगति से परिचालन में काफ़ी सुधार आएगा और व्यापार करने की लागत कम होगी। स्टार्ट–अप नई तकनीक की खोज करेंगे या भारत में नई तकनीक बनाएंगे जो कार्यभार को सरल बनाती है। जब नई तकनीकें स्वीकार की जाएँगी और माँग बढ़ेगी, तो कई बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ भारत में निवेश करने में रुचि दिखाएँगी। सेवाओं की अधिक आउटसोर्सिंग कई बहुराष्ट्रीय कंपनियां अब अपना काम छोटी कंपनियों को आउटसोर्स कर रही हैं, क्योंकि इससे वे अपने मूल काम पर ध्यान केंद्रित कर सकती हैं। जब ये स्टार्ट–अप कंपनियां अपनी प्रतिभा साबित करती हैं, तो कई अन्य कंपनियां भी भारत में अपना काम आउटसोर्स करने में रुचि दिखाती हैं, ताकि भारत उस क्षेत्र में विशेषज्ञ बन जाए। उदाहरण के लिए, भारत अब दुनिया के लिए वीएफएक्स हब बन रहा है। कई बड़ी कंपनियां अपना काम भारत को आउटसोर्स कर रही हैं, जिसका भारतीय अर्थव्यवस्था पर गहरा प्रभाव पड़ रहा है। भारतीय अर्थव्यवस्था पर स्टार्टअप का अप्रत्यक्ष प्रभाव भारतीय बाजार में धन का अधिक प्रवाह जब स्टार्ट–अप लोगों को नौकरी देता है, तो वे उत्पाद और सेवा खरीदना शुरू करते हैं, जिससे धन का प्रवाह बढ़ता है और सरकार का राजस्व बढ़ता है, जिससे भारतीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिलता है। जीडीपी में वृद्धि जब आय बढ़ती है, तो लोग बाजार में अधिक पैसा खर्च करना शुरू करते हैं, जिसका सीधा प्रभाव किसी देश की अर्थव्यवस्था पर पड़ता है। जीवन स्तर में सुधारः: जब लोगों के पास पैसा होगा, तो वे जीवन की गुणवत्ता में सुधार करने के लिए गुणवत्ता वाले उत्पाद खरीदना शुरू कर देंगे, इसलिए अच्छी गुणवत्ता वाले उत्पादों की मांग बढ़ जाएगी, जो अर्थव्यवस्था के लिए अच्छा है। संबंधित सेवा की मांग में वृद्धि स्टार्ट–अप के लिए कई सहायक सेवाएँ शुरू होती हैं जैसे पंजीकरण कंपनी, विपणन कंपनी, मानव संसाधन कंपनी जो नौकरियों का सृजन भी करती हैं जो अर्थव्यवस्था के लिए अच्छा है।[14]

सरकार द्वारा शुरू की गई विभिन्न योजनाएँ

राज्यों की स्टार्ट–अप नीतियाँः भारत एक संघीय रूप से संरचित राष्ट्र होने के कारण, स्टार्ट–अप पारिस्थितिकी तंत्र को बढ़ावा देने में राज्यों की महत्वपूर्ण भूमिका है। किसी राज्य केंद्र शासित प्रदेश में सक्षम पारिस्थितिकी तंत्र का मुख्य कार्य राज्य या केंद्र शासित प्रदेश द्वारा स्थापित संरचनाओं या ढांचे के साथ–साथ संरचनाओं के कार्यान्वयन का कार्य है।

सरकार द्वारा शुरू की गई विभिन्न स्टार्टअप नीतियाँ और प्रोत्साहन

मेक इन इंडियाः सितंबर 2014 में, प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने इस क्षेत्र में संसाधन लगाने के लिए संगठनों को बढ़ावा देकर असेंबलिंग डिवीजन को आगे बढ़ाने के लिए एक प्रमुख गतिविधि "मेक इन इंडिया" पेश की। इस अभियान का उद्देश्य दूरस्थ निवेश को आकर्षित करना और स्थानीय संगठनों को विनिर्माण में रुचि लेने के लिए प्रोत्साहित करना है, जिससे विकास की कहानी में योगदान मिलेगा। उदाहरण के लिए, शर्तों की मंजूरी, आयकर रिटर्न भरने और औद्योगिक लाइसेंस को 3 साल तक बढ़ाने के लिए एक ऑनलाइन ढांचा तैयार किया गया है। सरकार ने अधिकांश क्षेत्रों के लिए प्रत्यक्ष विदेशी निवेश की सीमा बढ़ा दी है। नींव को नया स्वरूप देकर और अत्याधुनिक तकनीक का उपयोग करके अग्रणी और निर्माताओं के लाइसेंस प्राप्त नवाचार अधिकारों की सुरक्षा।

स्टैंडअप इंडियाः प्रधानमंत्री का लक्ष्य स्टार्ट–अप को सशक्त बनाने के लिए रूपरेखा तैयार करना है और देश को नए स्टार्ट–अप के लिए सबसे बेहतरीन गंतव्य बनाना है। अगस्त 2015 में, उन्होंने नए व्यवसायों को बैंक सब्सिडी के साथ मदद करने और युवा भारतीयों के बीच उद्यम को बढ़ावा देने के लिए एक और पहल "स्टैंडअप इंडिया" की घोषणा की। 6 जनवरी 2016 को, केंद्रीय मंत्रिमंडल ने स्टैंडअप इंडिया पहल को मंजूरी दी थी, जिसका उद्देश्य महिलाओं और अनुसूचित जनजातियों और जातियों के बीच स्टार्ट–अप संस्कृति को बढ़ावा देना है। डिजिटल इंडियाः यह भारत सरकार द्वारा संचालित एक गतिविधि है, जिसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि सरकारी सेवाएँ ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म के माध्यम से प्रत्येक नागरिक तक पहुँच सकें। जुलाई 2015 में, पीएम ने डिजिटल इंडिया गतिविधि की घोषणा की, जिसका उद्देश्य प्रांतीय क्षेत्रों को उनके उन्नत ढांचे का निर्माण करके जोड़ना है। यह स्टार्ट–अप के लिए एक बेहतरीन व्यावसायिक अवसर बन जाता है। भारत में ऑनलाइन आधारित कंपनियाँ सरकार की पहल के तहत भारत के ग्रामीण क्षेत्र में जाना चाहती हैं। निष्कर्ष

भारत में एक बड़ी, जनसांख्यिकीय रूप से विविध आबादी है, जिसमें कई युवा काम की तलाश में हैं। राष्ट्र विकास की राह पर है, हालांकि, विकास की दर मध्यम रही है। सरकार ने आवश्यक मुद्दों की अंतर्निहित नींव को समझा है और मुख्य रूप से अर्थव्यवस्था, प्रशासन और श्रम के क्षेत्रों में उचित सुधार किए हैं क्योंकि यह अपनी औपनिवेशिक विरासत के नकारात्मक हिस्सों से खुद को मुक्त करने की कोशिश करती है। यह समझते हुए कि नवाचार–आधारित उद्यम सुधार विकास की गारंटी देता है, सरकार ने एक मजबूत विकास योजना के साथ महत्वपूर्ण दृष्टिकोण गतिविधियाँ अपनाई हैं।

Author's Declaration:

The views and contents expressed in this research article are solely those of the author(s). The publisher, editors, and reviewers shall not be held responsible for any errors, ethical misconduct, copyright infringement, defamation, or any legal consequences arising from the content. All legal and moral responsibilities lie solely with the author(s).

संदर्भ

1. डी. घोष और डी. अंशुल (2016) स्टार्ट–अप इंडिया प्रगति पर है, आइए एक कंपनी बनाएँः एक स्टार्ट–अप स्टोरी माइनस द बुलशिट, पेंगुइन रैंडम हाउस इंडिया प्राइवेट लिमिटेड।
2. निशिथ देसाई, (2016) "एक स्टार्टअप को सफल संगठन बनने के लिए कई मुद्दों का सामना करना पड़ता है, जिन्हें स्मार्ट तरीके से और बहुत सोच–समझकर और व्यवस्थित तरीके से निपटाया जाना चाहिए"।
3. बद्रा, एस., जैन, एस., और विचोर, एस. (2017)। फिनटेक और वित्तीय समावेशनः वैचारिक नींव और अनुसंधान परिदृश्य। वैश्विक ज्ञान, स्मृति और संचार।
4. एस्पार्क विरिडियन, (2017) छात्र आवास बाजार के वर्तमान परिदृश्य और भविष्य की संभावनाओं का आकलन, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंजीनियरिंग एंड मैनेजमेंट रिसर्च (आईजेईएमआर), 8(5), 160–163।
5. मिश्रा, ए., जाट, डी.एस., और मिश्रा, डी.के. (2021, अगस्त) नए स्टार्टअप की सफलता की भविष्यवाणी करने के लिए मशीन इंटेलिजेंसः एक सर्वेक्षण। डेटा साइंस, मशीन लर्निंग और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन की कार्यवाही में (पृष्ठ 99–105)।
6. जैन, ए. (2018) स्टार्टअप भारतीय अर्थव्यवस्था को बहाल कर रहे हैं? भारतीय अर्थव्यवस्था पर स्टार्टअप के प्रभाव पर एक अध्ययन, श्री राम कॉलेज ऑफ कॉमर्स के छात्रों की पत्रिका, 2(1), 1–17।
7. रानी, एन. (2018) क्या भारतीय स्टार्ट–अप के एंजल निवेशकों के बीच निवेश पैटर्न अलग–अलग है?

इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंजीनियरिंग एंड मैनेजमेंट रिसर्च (आईजेईएमआर), 8(4), 145–147।

8. जैन, ए. (2018) स्टार्टअप भारतीय अर्थव्यवस्था को बहाल कर रहे हैं? भारतीय अर्थव्यवस्था पर स्टार्टअप के प्रभाव पर एक अध्ययन, श्री राम कॉलेज ऑफ कॉमर्स के छात्रों की पत्रिका, 2(1), 15–20।
9. बिंदल, एम., गुप्ता, बी., और दुबे, एस. (2018) भारतीय अर्थव्यवस्था पर स्टार्टअप की भूमिका, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंजीनियरिंग एंड मैनेजमेंट रिसर्च (आईजेईएमआर), 8(5), 142–145।
10. जी., भुवन (2018) स्टार्टअप और स्थानीय विकास पर उनके प्रभाव, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इनोवेशन साइंस, 13(1), 1–16।
11. वेस्टलंड, एच., और ओल्सन, ए. (2011) आर्थिक उद्यमिता, स्टार्टअप और स्थानीय विकास पर उनके प्रभावः स्वीडन का मामला, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंजीनियरिंग एंड मैनेजमेंट रिसर्च (आईजेईएमआर), 8(5), 156–160।
12. चौधरी, एस. एल., और सिन्हा, एम. (2021) भारतीय स्टार्टअप इकोसिस्टम में उभरते रुझानों पर एक अध्ययनः बड़ा डेटा, क्राउड फंडिंग, साझा अर्थव्यवस्था, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इनोवेशन साइंस, 13(1), 1–16।
13. जैन अरिहंत (2017–18) स्टार्ट–अप भारतीय अर्थव्यवस्था को बहाल कर रहे हैं– भारतीय अर्थव्यवस्था पर स्टार्ट–अप के प्रभाव पर एक अध्ययन। स्टार्ट–अप इंडिया– एक अवलोकन – ग्रांट थ्रोंटन इंडिया, राज्य स्टार्टअप रैंकिंग फ्रेमवर्क, 2017
14. केपीएमजी डॉ. सुनीति चंडियोक (2016) भारत दुनिया का सबसे तेजी से बढ़ता स्टार्टअप इकोसिस्टमः एक अध्ययन, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंजीनियरिंग एंड मैनेजमेंट रिसर्च (आईजेईएमआर), 8(4), 136–140।

Cite this Article-

'सद्दाम हुसैन', 'भारतीय अर्थव्यवस्था पर स्टार्टअप का प्रभाव', Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal (RVIMJ), ISSN: 3048-7331 (Online), Volume:2, Issue:06, June 2025.

Journal URL- https://www.researchvidyapith.com/
DOI- 10.70650/rvimj.2025v2i60007
Published Date- 05 June 2025